

Shri Raghunath Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ४४४५
Title समान पत्र ग्रन्थः
Author α
Extent १६ Age α
Subject धर्मशास्त्रं

समानप्रवरग्रंथः

धधधध

4445

F. = 16

नामरागा गोमयवरादी नमो भगवतेः

कोशिक
काश्यप
कोटिभ
नारदाज
राधार
गौतम
वैजयं
शांतिभ
कोशिक

॥ यादिव कलस्वेदं पुस्तकम् ॥
पत्र १६

श्रीगणेशाय नमः।
नागरनी अष्टकुञ्जे
कापिष्ठः कवेनाश्च
कश्चो ह छाजिनास्तथा
पात्रासने चारवातोडा
मीदो छात्रात्रात्रादीनाम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शालाखंडं प्रवक्ष्यामि ईश्वरेण तु भाषितं ॥ शृणु
 गार्धप्ययमेन तदहंकथयामिते ॥ १ ॥ आद्येन परमेष्ठेन दत्तं कमलयोनये ॥ शिवेन स्थापि-
 तं चैव जगदुत्पत्तिकारणम् ॥ २ ॥ नागराणां हि तार्थाय पृथिव्यां पूर्वमेव हि ॥ द्वासप्ततिसमारब्धा ता-
 म्प्राणं प्रवरोत्तमा ॥ ३ ॥ गोत्रं कवलिका स्थानं देवता प्रवरास्तथा ॥ आमुष्या यलबीजं च पारपर्यं क्र-
 मस्तथा ॥ ४ ॥ दशभिः पंचभिश्चैव अवटंकशतैः किल ॥ गोत्राणां च चतुःषष्टिर्गोविता दुर्जितेन हि ॥ ५ ॥
 द्वासप्ततिश्च गोत्राणां तथा मुष्या यलानि च ॥ चतस्रः कवलिकाः प्रोक्ता स्थानेस्मिन् पूर्वसन्नि-
 धौ ॥ ६ ॥ सप्तविंशतिश्चैवा प्रोक्ता स्थापनदा दश स्मृताः ॥ एकाशीतिगणः प्रोक्ता यदा चैव चतुर्दश ॥
 ७ ॥ रुद्रा एका दश प्रोक्ता स्मिन् सूत्रे स्वयं शुभा ॥ सप्तविंशतिर्दुर्गाश्च ललिता दशैव तु ॥ ८ ॥ पंच-
 पीडास्तथैवान्या पंच भूतानि कानुता ॥ दिक्षु सर्वास्तु वै नागरुद्रेण स्थापिता पुरा ॥ ९ ॥ ब्रह्मा विष्णुस्तथा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ शालाखंडं प्रवक्ष्यामि ईश्वरेण तु भाषितं ॥ शृणु
 गार्धप्ययमेन तदहंकथयामिते ॥ १ ॥ आद्येन परमेष्ठेन दत्तं कमलयोनये ॥ शिवेन स्थापि-
 तं चैव जगदुत्पत्तिकारणम् ॥ २ ॥ नागराणां हि तार्थाय पृथिव्यां पूर्वमेव हि ॥ द्वासप्ततिसमारब्धा ता-
 म्प्राणं प्रवरोत्तमा ॥ ३ ॥ गोत्रं कवलिका स्थानं देवता प्रवरास्तथा ॥ आमुष्या यलबीजं च पारपर्यं क्र-
 मस्तथा ॥ ४ ॥ दशभिः पंचभिश्चैव अवटंकशतैः किल ॥ गोत्राणां च चतुःषष्टिर्गोविता दुर्जितेन हि ॥ ५ ॥
 द्वासप्ततिश्च गोत्राणां तथा मुष्या यलानि च ॥ चतस्रः कवलिकाः प्रोक्ता स्थानेस्मिन् पूर्वसन्नि-
 धौ ॥ ६ ॥ सप्तविंशतिश्चैवा प्रोक्ता स्थापनदा दश स्मृताः ॥ एकाशीतिगणः प्रोक्ता यदा चैव चतुर्दश ॥
 ७ ॥ रुद्रा एका दश प्रोक्ता स्मिन् सूत्रे स्वयं शुभा ॥ सप्तविंशतिर्दुर्गाश्च ललिता दशैव तु ॥ ८ ॥ पंच-
 पीडास्तथैवान्या पंच भूतानि कानुता ॥ दिक्षु सर्वास्तु वै नागरुद्रेण स्थापिता पुरा ॥ ९ ॥ ब्रह्मा विष्णुस्तथा

॥ १ ॥

॥ ५ ॥

स्वरं द्रो वैश्रवणो यमः । अंबायेरी महिष्ठा यशामाता दुर्गहारिका ॥ १० ॥ यतस्त्रो देवता धेया पुरातन
 द्वेष्टनिर्मिताः । अंबायेरी देवता दुर्गावशाच्चैव ग्रहास्तथा ॥ ११ ॥ रुंडा भगवती तारानंदा धारा चतुष्टयं
 । ज्ञाभिश्च धारितो गर्तनिमज्जन्तस्तुंगकः ॥ १२ ॥ अथ सप्त एव नामानि । छिनः शेषे च रात्रे यो वौ
 ह्यो दांतश्चतुर्थकः । उपमन्युस्तथा क्रौंचकैरोर्यश्चैव एस्तथा ॥ १३ ॥ एते च एकजं प्रोक्ता अपहिरत्र
 निवासिनः । अथ गोत्राणि ॥ कौशिकः ॥ काश्यपः ॥ १४ ॥ दर्मः ॥ १५ ॥ लक्ष्मणः ॥ १६ ॥ वसुपालः ॥ १७ ॥ पुरेति कायनः ॥ १८ ॥
 उद्धदलः ॥ १९ ॥ भारद्वाजः ॥ २० ॥ वाराहः ॥ २१ ॥ मोनेयः ॥ २२ ॥ कौटिल्यः ॥ २३ ॥ जालोभायनः ॥ २४ ॥ पाराशरः ॥ २५ ॥ गोपालः ॥
 २६ ॥ औष्टाः ॥ २७ ॥ गौतमः ॥ २८ ॥ दत्तात्रेयः ॥ २९ ॥ कौरंगवः ॥ ३० ॥ गालवः ॥ ३१ ॥ कापिष्ठलः ॥ ३२ ॥ जातकल्यः ॥ ३३ ॥
 गौरीयवः ॥ ३४ ॥ शार्कवः ॥ ३५ ॥ गांगायनः ॥ ३६ ॥ सांकल्यः ॥ ३७ ॥ शार्कराक्षः ॥ ३८ ॥ पिप्पलादः ॥ ३९ ॥ शांकाय
 नः ॥ ४० ॥ गार्ग्यः ॥ ४१ ॥ मातकायनः ॥ ४२ ॥ पालिनीयः ॥ ४३ ॥ शार्कः ॥ ४४ ॥ शार्कवापः ॥ ४५ ॥ शार्किल्यः ॥ ४६ ॥ जौकार्यः ॥ ४७ ॥
 रव्यः ॥ ४८ ॥ कौशलः ॥ ४९ ॥ आग्निवेद्यः ॥ ५० ॥ जौकार्यः ॥ ५१ ॥ शार्कितः ॥ ५२ ॥ यंद्रभाजवः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

गिरसः॥ ४०॥ कौशः॥ ४१॥ मण्डव्यः॥ ४२॥ मोदकः॥ ४३॥
 जैमिनेयः॥ ४४॥ वेदीनसः॥ ४५॥ गोभिलः॥ ४६॥ कात्याय
 नः॥ ४७॥ वसिष्ठः॥ ४८॥ नैध्रुवः॥ ४९॥ निराशयणः॥ ५०॥ गोव
 लः॥ ५१॥ जमदग्निः॥ ५२॥ शालिहोत्रः॥ ५३॥ धनुषः॥ ५४॥
 अगस्त्यः॥ ५५॥ कुशानसः॥ ५६॥ भागुरायणः॥ ५७॥ शत्रुघ्नः॥ ५८॥
 वैनतेयः॥ ५९॥ कात्यायनः॥ ६०॥ हरिवरः॥ ६१॥ शंखग्यः॥ ६२॥ आत्रेयः॥ ६३॥
 अवनः॥ ६४॥ एते चतुः षष्ठिगोत्रमुनयः॥ अथ मुष्ययणानि॥ त्रैत॥ १६॥ त्र॥
 कुप्रा॥ ३॥ नंद॥ ४॥ धौष॥ ५॥ रमि॥ ६॥ दस्य॥ ७॥ दामा॥ ८॥ नृति॥ ९॥ भव॥ १०॥ नाग॥ ११॥ मित्र॥ १२॥ देव॥ १३॥ वर्म॥ १४॥
 अथ शिवस्थानानि॥ श्रीलालशिव॥ १॥ बृहस्पतिशिव॥ २॥ पलाशियाशिव॥ ३॥ घंटाशिव॥ ४॥ अंबेलेसर
 शिव॥ ५॥ पूर्वद्वारा॥ ६॥ लालशिव॥ ७॥ देवशिव॥ ८॥ लाजविनायकशिव॥ ९॥ लाजविनायकशिव॥ १०॥ बटशिव॥

॥२॥

१० खलमंजुपिकाशिव। ११ कोटिशिव। १२ वीतशिव। १३ वातशिव। १४ पोतिशिव। १५ कं
 सारशिव। १६ यक्षशिव। १७ अद्भुतशिव। १८ कामशिव। १९ गुहाशिव। २० हाटक
 शिव। २१ चमत्कारशिव। २२ मधुमयनशिव। २३ ब्रह्मशिव। २४ गुंदशिव। २५ दुर्ग
 शिव। २६ शिव। २७ शिव। २८ शिव। २९ शिव। ३० शिव। ३१ शिव। ३२ शिव। ३३ शिव। ३४ शिव। ३५ शिव। ३६ शिव। ३७ शिव। ३८ शिव। ३९ शिव। ४० शिव। ४१ शिव। ४२ शिव। ४३ शिव। ४४ शिव। ४५ शिव। ४६ शिव। ४७ शिव। ४८ शिव। ४९ शिव। ५० शिव। ५१ शिव। ५२ शिव। ५३ शिव। ५४ शिव। ५५ शिव। ५६ शिव। ५७ शिव। ५८ शिव। ५९ शिव। ६० शिव। ६१ शिव। ६२ शिव। ६३ शिव। ६४ शिव। ६५ शिव। ६६ शिव। ६७ शिव। ६८ शिव। ६९ शिव। ७० शिव। ७१ शिव। ७२ शिव। ७३ शिव। ७४ शिव। ७५ शिव। ७६ शिव। ७७ शिव। ७८ शिव। ७९ शिव। ८० शिव। ८१ शिव। ८२ शिव। ८३ शिव। ८४ शिव। ८५ शिव। ८६ शिव। ८७ शिव। ८८ शिव। ८९ शिव। ९० शिव। ९१ शिव। ९२ शिव। ९३ शिव। ९४ शिव। ९५ शिव। ९६ शिव। ९७ शिव। ९८ शिव। ९९ शिव। १०० शिव।

६ बजाई १७ चंदाई ८ कमलाक्षी ९ लोराई १० घोराई ११ माहा १२ वाराहा १३ खेराई १४

१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

३

अष्टादश १५ पुंड्रना सायली १६ कोशीडावजी १७ भरहुडी १८
यंडमा १९ विश्वरूपिणी २० एवं १२ ३ भद्रकाजी २१
कल्याणी २२ ब्रह्मवारिणी २३ काला २४ महाकाली २५ कपाली २६ उबरेली २७ इलादेवी २८
सर्वाणी २९ लोहदंडी ३० निम्वंडी ३१ रेवती ३२ शिवदूता ३३ गोमती ३४ सरस्वती ३५ अगवती ३६ पार्व
महासरोजी ३७ कुंजरोडी ३८ ता १२ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

रुद्राक्षी। सुपर्णाक्षी। सुपनखा। बालरखी। अजामुखी। महालक्ष्मी। विशालाक्षी।
 विरुपाक्षी। असुरघ्नी। मनोदरी। कामाक्षी। गणध्याक्षी। एवं १२। ५। अजलक्ष्मी। महाजलक्ष्मी।
 पिशाची। रत्नायची। शांवल्लि। संधवि। हरसिद्धि। महावृद्धि। नैर्भति। ब्रह्मशांति। शिखिदेवती।
 क्षणदेवती। एवं १२। ६। धैरी। तुंगसरि। बडबादि। गांधारि। कुंचनारि। धामतारि। जारि। बजेरि। रोष्ण
 बूढा। गुरुशिव। अंबरिणी। उंबशेरि। एवं १२। ७। विध्यवासिनि। उडियाणि। नारणि। ठजणि। बापिणी। ना
 यिणी। शांतिनि। जोइनि। कोलापुरी। जालंधरी। पुनगिरि। उदयगिरि। एवं १२। ८। पालेसरि। जागिसरि। लक्षेस
 रि। कलेसरि। नागेसरि। वित्रेसरि। पिंगलेसरि। अमरेसरि। योजेसरि। विध्येसरि। चंडेसरि। पटेसरि। एवं
 १२। ९। पोपलाज। मरुयाज। होगुलाज। लंबज। रवीमज। बालज। अण्डिरी। असाउरी। लडाउरी। अभाउरी।
 अयराधार। एवं १२। १०। रंभंडलाखर। उंजले। स्वर्भंगला। सुंगला। कनखला। श्रीपला। शयडइला। यूडइला।
 महिमा। रूपमा। महःस्तन। बहूस्तन। एवं १२। ११। रंगावि। रंभलावि। गंगावि। बौदरावि। उमावि। पुणहावि। अजावि।
 मलावि। विष्णुवि। नृगावि। एवं १२। १२। महासुंटा। बामुंटा। प्रवंडा। धूर्मदंज। सन्नित्या। दलिया। एष्टपुरा। विष्णु

मा। अक्षरा। कर्णगुहा। मातलिंगा। विश्वसुरया। एवं १२। १३। बा। जहा। को। किला। वृटी। उभयता। वेगव
 ती। प्रतना। स्वरडंटी। ली। जार्बदांणी। नंदा। जहा। श्रीमाता। १२। १४। एवं रमंस्त। १५६। ॥ उपयगलाधिपा
 नां। नामानि। स्वर्ग। मत्पु। नरनु। अयकोटि। जाला। अधु। जिहुं। दुधारियो। उमा। उदो। जहा। विनायक। ४
 घोषु। एवं १३। स्थितिश्च। वर। ए। न्या। गौ। जालि। विविधानि। च। उपवटं। क। च। वस्थानं। मुनयः। क्रमयोगिनः।
 ॥ १॥ देवमुष्पा। यण। ना। तिक। व। ली। न। गरे। ए। च। संकेता। मुनिभिः। श्रोता। शा। ते। स्त। य। वृ। भु। सु। या। ॥ १॥ ॥ उपादि। पा। व
 स्ववोरुद्रा। विश्वेदेवा। मरुद्र। ए। ॥ यक्षारकं। लो। शा। श्र। गौरी। व। यनवकं। परं। ॥ ३। च। वारि। मृग। पां। ठं। दि। का। लाः। क्षत्र
 पास्त्रि। वृं। दुर्गाः। सिद्धा। स्तथा। दू। त्यस्त। ता। यनवकं। परं। ॥ ४। स। प। वि। शो। न। रो। ह्ये। षः। स्थानैरुद्रविनिर्मिते। देवतानां। मुनी
 नां। च। रक्षार्थं। मस्तजत्पुनुः। ॥ ५॥ ॥ अ। प। क। व। लि। का। व्यक्तिः। प्रथमकवलिक्रायां। यंदेवा। कालीया। पंवायाणा। कूकडा
 सीधारेकजा। दलाणेवा। टारा। ह। लवाडेवा। निर्गया। कचयला। कथउरा। कापिष्ठला। अदिहरा। गरुडा। सांधा। बरुहा
 ॥ ५॥ ॥ टीया। मा। लि। का। बा। द। ए। ॥ दमनिका। सूनेताणा। प्रश्नियाणा। कांध्या। अहलोला। महिसिया। द्यंटेया। योटिया।
 वित्रेया। खारुद्रा। मंगला। कर्कशराणा। दारियावा। एवं ३२ द्वितीयकवलिकायां। जू। आ। ए। ॥ रा। को। वी। री। या। प्रतीयाणा।

महापार्ष्णि। लुलाणा। बंधुर्या। ह्रस्वालेवा। मंकलाजा। पीयला। वारिकाजा। शिवलाणा। मराउला। ज्ञातीया। सं
तारा। लुलेवा। तडीयाणा। बोकडा। ईसरा। षडा यथा। राषसा। लां टशिव। मित्राउला। भगउरा। वारडुला। लुलोडेवा।
महीयायचा। स्तनगन। दीषीयाणा। भणकुलेचा। हरिहरा। मंडडपला। बहोला। काशंटवली। दोसटा। मंडां ऐ
या। पांनशरा। मंगशराणा। स्वयरवडा। महीसरा। एवं ३७॥ ततायकवलिकायां। गुडेवा। कूकडेवा। द्वालव
भ्रा। चउसाजा। पसाउला। प्रउला। मुंझा। वजेचा। माभताणा। कलौडा। सूक्ष्मिया। देउलवाजा। भूतिया। भद्र
णा। वसदाणा। दिवाकरणा। वडहरा। डूंगरेवा। कमांलेचा। कलांलेचा। वसइजा। भयपलासा। कलोठा। मुनैरेरा।
यणा। दुलियाणा। बीटीयाजा। लांगलादीवा। स्वयंवक। जयशाला। वडहजेचा। टीवा। कासरा। मसवाजा। नांदी। रो
भा। विहोडेवा। हुडीया। हुंछाणा। दलेंबा। पिनाचभूतिया। अंबावा। पंचकुलेवा। पंचउठा। भसलेचा। भद्र
सीणा। एवं ४१॥ चतुर्थकवलिकायां। थुदवाजा। पलाणा। मलाणेचा। बहिरुआ। सोरठा। मडउडा। करतर। गडूया
णा। पिस्तरणा। हिंगशिवा। पंचाजा। हुडकीया। वस्त्राउला। कुरारा। जाबाजा। थुरीया। उदेहा। फाळा। सलखा। अ
रउधा। गरहया। मायउरा। गेरिमा। पलासलेचा। कांबणा। छोडीयाजा। खालेया। उभाजा। कोद्राजा। नंदेउरा।
कडा। कविलाणा। कुंजरोडा। कुंवरवसा। स्तलहरा। थोहरा। रहोला। एवं ३९ पंचकवलिकायां। समस्त १५५॥

सुरापो ब्रह्मज्ञाय त्रस्वर्णं हस्ततल्यगः॥ तसं गिनश्च शुद्धं तिपुष्प देहाति वाक्यतः॥१॥ पट्टकः प्रतिप
 ष्ठाचतां वृत्तं महिदर्पणं॥ हस्तकोधारकश्चैव न बहिस्सोव पट्टिजे॥२॥ वरायिका वावर्दि कामतासाह
 यमेव च॥ शुद्धसंततिटं कोवानगरे पंच निग्रहा॥३॥ मुद्रामात्रादयः कार्याः सप्त विंशतिवादिनः॥ वारि
 का ब्रह्मणोद्गारे अनुजस्य निशोधकाः॥४॥ बहुचश्च द्वादशौ च स ध्युर्दना पंच च॥ चतुर्दश च स्रष्टो ग्या
 यवसि प्रदश स्मृताः॥५॥ पंचाशदप्युसंयुक्ता एते चाद्या मिहैव तु॥ न वै ये शुद्रजातीया विप्रये सपिनद
 म्नाः स्तेषां नामानि वैश्रण॥६॥ नार्मवर्मगुप्रदास्य विप्रादीनां क्रमेण तु॥ नां मांते योजनीया विप्रस्ये वापि
 तदर्पकाः॥७॥ इति विमुक्ति करणोपायः॥ नागराणां समानगोत्र समान प्रवर निर्णयो विवाहकरणयोग्या
 योग्य आरभ्यते॥ अवटंकगोत्रैः प्रवरैः कवलीवेदशर्मभिः॥ शारवा देवा शिवस्थाननवाभिर्जीगरेः
 स्मृताः॥८॥ नागराणां अष्ट कुलश्रेष्ठ कापिष्टलाः॥ कचेलाश्च २ कल्लोदा ३ गेरिमासा
 प्या॥४॥ पलासाणां ५ पणारो ६ मंदोयला ७ गलईयाट

५

प्रबटंक

१ कर्कशराणा

१ गन्ड

१ बोटीयाज

१ लोखा

१ स्तनगन

१ पीपला

१ आलवध

१ बोटीयाज

१ माउताणा

१ प्रजीयणा

१०

गोत्र

१ कौशिक

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१०

शर्म

१ देव

१ देव

१ देव

१ देव

१ देव

१ देव

१ देव

१ देव

१ देव

१०

कुली

१

१

२

२

२

३

३

३

२

१०

वेद

१ सक्

१ सक्

१ अथर्वण

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ तथा

१ सक्

१०

भद्रिका

१ विश्वदुर्गा

१ गंगावि

१ तंटासरी

१ आमाता का

१ भद्राई

१ दोमंकर

१ सैमंकर

१ नमजिर

१ एकापुर

१ सुपणक्षी

१०

एवंगोत्र १० प्रवर ३ वि

श्यामित्र देवरात ३

दलास्य/कंसाररा

व। सतोव सवा ग यकु

पियां। आदित्यपिंग

लेश्वरा। यक्षरा मेक्षर।

नागक केट्टक। विना

यक विफुजियो। गौरी

बालगुंदि। एतेषादना

नांगोत्रै कपोद विवाह

॥

अवटंक	गोत्र	शर्म	कुबला	वैद	अदरिका	एवंगोत्रप्रवर
१ सांध्रा	१ कश्यप	१ दत्ता	१ १	१ सक	१ एषपुरा	करयपात्रवसार
१ कुल्लोडा	१ तथा २	१ तथा २	१ ३	१ सयजुः २	१ विवज	नैधव। गुंदशिव।
१ संखिया	१ तथा ३	१ तथा ३	१ ३	१ यजुः ३	१ बालज	कद्रवस्ववा। रामेश्वर।
१ लोंगणदीवा	१ तथा ४	१ तथा ४	१ १	१ यजुः ४	१ लजवज	सूर्यलोलादित्य।
१ कूकडा।	१ दभस ५ घोष	१ दभस ५ घोष	१ १	१ सक ५	१ लोबज ५	यक्षलक्ष्मलेश
१ कलेश	१ लक्ष्मण ६	१ दभस ६	१ १	१ यजुः ६	१ मरुआज ६	रानागस्तद
१ द्यटेवा	१ तथा ७	१ दभस ७	१ २	१ यजुः ७	१ कविलावि ७	का। कोटिविनाय
१ रहोला	१ तथा ८	१ दभस ८	१ २	१ अथर्व ७	१ गंधारि ८	कोगलेशः। गो
१ चित्रेवा	१ वसुपाल ९	१ दभस ९	१ २	१ अथर्व ८	१ मिमिकरी ९	रापयपीश। का
१ हरिसर	१ हरिक १०	१ दत्ता १०	१ ३	१ अथर्व ९	१ कुलंबशेखा १०	माक्षपीठा। एवं
१ मंगराशा	१ ऐतिकायन ११	१ दत्ता ११	१ ३	१ सक ११	१ इम्यरा ११	दाक्षानाभि
१ छुट्टा १२	१ छुट्टा १२	१ दत्ता १२	१ ३	१ साम १२	१ बाबज १२	नगोत्रे विप्रवरैकादविवाहः।

٧٩

۱۹۹

二

天

५५

99

॥=प्रवटंक॥ गोत्र॥ राम॥ ॥कवली॥ वेद॥ भद्रिका॥ एवं गोत्र॥ १५॥ प्रवर॥ ॥अंगिरस॥

॥१॥ अरिहरा॥ १॥ भारद्वाज॥ १॥ त्रोट॥ १॥ साम॥ १॥ अचर॥ १॥ भारद्वाज॥ ॥वार्हस्पत्य॥ ॥वीत॥ शिव॥

॥१॥ राखसा॥ १॥ तथा॥ १॥ नात॥ १॥ ॥२॥ साम॥ १॥ ब्रह्मशांति॥ ॥रुद्रवसव॥ ॥गयकृपा॥ ॥सूर्यभालसा॥

॥१॥ महापाद॥ १॥ तथा॥ ३॥ नात॥ ३॥ ॥२॥ साम॥ १॥ ईश्वरी॥ ॥मी॥ विनाकगलवज॥ ॥गौरीशमिष्टा॥ १॥

॥१॥ सनारा॥ १॥ तथा॥ ४॥ नात॥ ४॥ ॥२॥ साम॥ १॥ अंबायेरी॥ ॥यक्षचित्रेश्वर्य॥ ॥सन्निहत्यापाठ॥

॥१॥ बडहरा॥ १॥ तथा॥ ५॥ नात॥ ५॥ ॥२॥ साम॥ १॥ अमर॥ १॥ प्रवटंक॥ १॥ उदानी॥ १॥ विधायोत्रेवि

॥१॥ हुडीयासा॥ १॥ तथा॥ ६॥ नात॥ ६॥ ॥२॥ साम॥ १॥ रुद्र॥ १॥ प्रवटंक॥ १॥ विवाहः॥

॥१॥ पुरवाजा॥ १॥ तथा॥ ७॥ नात॥ ७॥ ॥२॥ साम॥ १॥ अमर॥ १॥ अमर॥ १॥ अमर॥ १॥

॥१॥ जैवाजा॥ १॥ तथा॥ ८॥ नात॥ ८॥ ॥२॥ साम॥ १॥ अमर॥ १॥ अमर॥ १॥ अमर॥ १॥

॥१॥ राकराया॥ १॥ तथा॥ ९॥ नात॥ ९॥ ॥२॥ साम॥ १॥ अमर॥ १॥ अमर॥ १॥ अमर॥ १॥

॥१॥ अरुडधा॥ ११॥ ॥१॥ अरुडधा॥ ११॥ ॥१॥ अरुडधा॥ ११॥

[Faint, mostly illegible handwritten text in Devanagari script, organized in two columns separated by a vertical line.]

8

॥ अष्टक ॥ ॥ गौत्र ॥ ॥ शर्म ॥

१ निगृथि १	१॥ पाराशर ११	१॥ दत्ता १
१ मंजला २	१॥ तप्या ॥ २	१॥ दत्ता २
१ पानशरा ३	१॥ तप्या ॥ ३	१॥ दत्ता ३
१ वसुधा ४	१॥ तप्या ॥ ४	१॥ दत्ता ४
१ गीर्वाण ५	१॥ तप्या ॥ ५	१॥ दत्ता ५
१ वरुणा ६	१॥ तप्या ॥ ६	१॥ दत्ता ६
१ गरुडा ७	१॥ तप्या ॥ ७	१॥ दत्ता ७
१ सप्तर्षि ८	१॥ तप्या ॥ ८	१॥ दत्ता ८
१ सप्तर्षि ९	१॥ तप्या ॥ ९	१॥ दत्ता ९
१ कांध्या १०	१॥ गोपाल १०	१॥ नंद १०
१ अहलो ११	१॥ तप्या ॥ ११	१॥ नंद ११
१ प्रक्षिया १२	१॥ तप्या ॥ १२	१॥ नंद १२
१ कालिया १३	१॥ श्रीकृष्ण १३	१॥ नंद १३
१ सान्नि १४	१॥ तप्या ॥ १४	१॥ शर्म १४
१ ककुत्था १५	१॥ तप्या ॥ १५	१॥ शर्म १५
१ गीर्वाण १६	१॥ तप्या ॥ १६	१॥ शर्म १६
१ मंजला १७	१॥ तप्या ॥ १७	१॥ शर्म १७
१ वसुधा १८	१॥ तप्या ॥ १८	१॥ शर्म १८
१ पानशरा १९	१॥ तप्या ॥ १९	१॥ शर्म १९
१ निगृथि २०	१॥ तप्या ॥ २०	१॥ शर्म २०

॥ कवली ॥ ॥ वेद ॥

१	१ साम १
१	१ सक् २
१	१ अथर्व ३
१	१ सक् ४
१	१ सक् ५
१	१ सक् ६
१	१ साम ७
१	१ साम ८
१	१ सक् ९
१	१ सक् १०
१	१ सक् ११
१	१ सक् १२
१	१ सक् १३
१	१ यजुः १४
१	१ सक् १५
१	१ सक् १६
१	१ सक् १७
१	१ सक् १८
१	१ सक् १९
१	१ सक् २०

॥ भारिका ॥ एवं गौत्र १६ प्रवर

१ सन्निह १	१॥ वासिष्ठ १६
१ तथा २	१॥ या/पाराशर १७
१ तथा ३	१॥ वसुधा १८
१ वासुधा ४	१॥ सव/यक्षरात्रेश्वर १९
१ सान्निह ५	१॥ सूर्यपुष्पादिप २०
१ तथा ६	१॥ गौरी शर्मिष्ठा विना २१
१ यिष्मेश्वरी ७	१॥ यक अर्जुन दार २२
१ कंवना ८	१॥ नाग पूर्व प्रतोल्या २३
१ पालेश्वरी ९	१॥ कामाक्ष्यादी २४
१ वाजु १०	१॥ नविशति त्रिधा गो २५
१ सन्निह ११	१॥ त्रै प्रवरैक्याद विवाहः २६
१ वा १२	
१ तथा १३	
१ सौमंकर १४	
१ सान्निह १५	
१ नागेश्वरी १६	
१ कनेउरा १७	
१ वाजु १८	
१ कनेउरा १९	
१ कनेउरा २०	

गौत्र ३

अवटं॥ गोत्र॥ राम॥

१ धारिथाणा १	१ गौतम १	१ नंद १
१ लूजाणा १	१ तथा १	१ नंद २
१ लोक ३	१ तथा ३	१ नंद ३
१ लूजाणा ४	१ तथा ४	१ नंद ४
१ कुजीया ५	१ तथा ५	१ नंद ५
१ नांद ६	१ तथा ६	१ नंद ६
१ विजोड्या ७	१ तथा ७	१ नंद ७
१ उधारा ८	१ तथा ८	१ नंद ८
१ रोम ९	१ तथा ९	१ नंद ९
१ कावलाणा १०	१ तथा १०	१ नंद १०
१ हवाडेया ११	१ तथा ११	१ नंद ११

११

कवली॥

१
२
३
३
३
३
३
३
३
४
३

११

वेद॥ महादिका॥ एवंगोत्र११ प्रवर

१ सक १	१ लूजाणा १	३ गौतम १
१ यजुः २	१ यवा २	सा ३
१ सोम ३	१ सोम ३	१ सोम ३
१ अथर्व ४	१ अथर्व ४	१ अथर्व ४
१ यजुः ५	१ यजुः ५	१ यजुः ५
१ सक ६	१ तथा ६	१ तथा ६
१ सक ७	१ तथा ७	१ तथा ७
१ सक ८	१ तथा ८	१ तथा ८
१ सक ९	१ तथा ९	१ तथा ९
१ सक १०	१ तथा १०	१ तथा १०
१ सक ११	१ तथा ११	१ तथा ११

११

११

प्रवरैकपादविवाहः गोत्र १

अवटंक

१ धोडि पाडला १
 १ छात्रेया २
 १ कोद्राडला ३
 १ उदेका ४
 १ नंदरा ५
 १ वारडडला ६
 १ पूराया ७
 १ दलांलो ८
 १ कठला ९
 १ उभाणा १०

अवटंक

१ गुरुपाणा १
 १ चंडाला २

गोत्र

१ छांदोग्य १
 १ तथा २
 १ तथा ३
 १ आत्रेय ४
 १ तथा ५
 १ तथा ६
 १ वज्रत्रय ७
 १ तथा ८
 १ कोद्रंगव ९
 १ आत्रेय १०

गोत्र शर्म
 कोशला दत्त
 पाण्डला दत्त

शर्म

१ गुरु १
 १ गुरु २
 १ गुरु ३
 १ गुरु ४
 १ गुरु ५
 १ गुरु ६
 १ गुरु ७
 १ गुरु ८
 १ गुरु ९
 १ गुरु १०

कवला

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०

वेदयजुः

१ यजुः १
 १ यजुः २
 १ यजुः ३
 १ सक् ४
 १ साम ५
 १ साम ६
 १ सक् ७
 १ सक् ८
 १ सक् ९
 १ यजुः १०

कवला वेद

१ साम
 १ यजुः
 १ सक्

भटारिका

१ यजुः १
 १ यजुः २
 १ यजुः ३
 १ सक् ४
 १ साम ५
 १ साम ६
 १ सक् ७
 १ सक् ८
 १ सक् ९
 १ यजुः १०

भटारिका

१ साम
 १ यजुः
 १ सक्

एवंगोत्र १० प्रवर ३

१ विश्वदुर्गा १
 १ तथा २
 १ तथा ३
 १ विनेक्षरा ४
 १ उपवाधेरी ५
 १ जंबुकादी ६
 १ गुरुला ७
 १ विश्वदुर्गा ८
 १ कविजावि ९
 १ पाण्डरा १०

भटारिका

१ साम
 १ यजुः
 १ सक्

१ विश्वदुर्गा १
 १ तथा २
 १ तथा ३
 १ विश्वदुर्गा ४
 १ उपवाधेरी ५
 १ जंबुकादी ६
 १ गुरुला ७
 १ विश्वदुर्गा ८
 १ कविजावि ९
 १ पाण्डरा १०

२
एवं गोत्रं प्रवर्तुकाश्रयः
अभिधादेवना। तत्केशरद
शिवः। रुद्रयक्ष। वसवविदरा
दित्यामध्ये सूर्यसूजस्थान।
विनायकविफुडिया। गौरीपंथ
पाग। उद्विधा। लोपीठं। गोत्रैक्याप्रवरैक्या
दविधाः॥ गोत्र ॥२॥

अवटंक ॥
 १ कचद्वजा १
 १ कापिष्ठल २
 १ कुठारी ३
 १ कलौका ४
 १ बौसट ५
 १ पंचगुलेरा ६
 १ संकलजा ७
 १ जयचोला ८
 १ अद्रता ९

गोत्र ॥
 १ कापिष्ठल १
 १ तथा २
 १ तथा ३
 १ तथा ४
 १ तथा ५
 १ तथा ६
 १ गौरीशिव ७
 १ तथा ८
 १ जातुकार्पण ९

शाम
 १ नागदत्त १
 १ तथा २
 १ तथा ३
 १ तथा ४
 १ तथा ५
 १ तथा ६
 १ रुप ७
 १ गुप्त ८
 १ यज्ञ ९

कवली वेद
 १ रुक् १
 १ भक् २
 १ भक् ३
 १ सक् ४
 १ सक् ५
 १ सक् ६
 १ सक् ७
 १ सक् ८
 १ सक् ९

भद्रिका
 १ विमदुर्गा १
 १ विदुर्गा २
 १ अजपा ३
 १ क्षेमकरी ४
 १ कलंबशोष ५
 १ अंबाधरी ६
 १ रूपनरवी ७
 १ लज्जुता ८
 १ भद्रमा ९

एवंगोत्रप्रवरवासिष्ठ। अथलेश्वरशिवायसवरामेश्वरी। रुद्रआनंदेश्वरी। सूर्यबालादित्या।
 विनायकस्तत्र। गौरीआनंदेश्वरी। यक्षमहाहदमध्ये। नागपुंडरीक। वाराह। पाह। गोत्रेकात्प्रवरे
 दविवाहः॥ गोत्र ३॥

अवतंक	गोत्र	कवली	वेद	भटारिका
१ वडहजेया	१ पाणिन	३	१ उपध्व	१ भू-प्राई
१ टीबा	१ कौशिकर	३	१ यजुः	१ जामाती
२	२	३	२	२
१ अवतंक	गोत्र	शर्म	कुलविद	भटारिका
१ भगउरा	१ गाययना	मित्र	१ सक	१ जाखि
१ मित्राडला	१ तथा	मित्र	१ सक	१ बलाइ
१ वाटिका ला	१ तथा	मित्र	१ सक	१ तथा
१ पिस्तरणा	१ तथा	मित्र	१ सक	१ जाखि
१ करतर	१ तथा	मित्र	१ सक	१ पबधरी
१ मही सरा	१ तथा	मित्र	१ सक	१ पापला
१ धर्ति आ	१ तथा	मित्र	१ साम	१ विश्वदुरगा
१ मोर हा	१ तथा	मित्र	१ साम	१ निर्विदेवति
१ मेणी बा	१ तथा	मित्र	१ साम	१ विष्णु
१ खय वक	१ तथा	मित्र	१ साम	१ वशिष्ठा

एवं गोत्र प्रवर सामान्य
विश्वामित्र। अथ मर्षण। मा
धुच्छंदः। कोटिनिवा। कोटि
विनायकगणेश। गौरीपा
ठगौरी। सुद्रहाटकेश्वर।
वसवधक्ष। सिद्धेश्वर। नाग
प्रनेतः। एवं देधा गोत्रैका
प्रवरैकादविवाहः। गोत्र
चरास्तूर्यकविस्मरादित्याद्य
संविनायक। अथ ये योगीश्वरभ
गवता। पूर्णगिरिपाठ। एकाष्टा
गोत्रैकाप्रवरैकादविवाहः।
गोत्रभेदेपि द्विधा। गोत्र

चपवटंक	जोत्र	शर्म	कवली	वेद	भटारिका	एवंगोत्र१२पूव
१ मन्त्रवाज१	१ शार्क शस्त्र१	१ मिश्रशर्म१	३ ३	१ सक्त१	१ सप्तहवन	२५ भार्गवाच्य
१ कासर१	१ तथा२	१ मिश्रशर्म२	३ ३	१ तथा२	१ सप्तम२	वनाऽप्राप्तवाना
१ भयपलाश३	१ तथा३	१ मिश्रशर्म३	३ ३	१ तथा३	१ पिशाची३	ओर्वी। जामदग्न्य
१ महिसाया४	१ तथा४	१ मिश्रशर्म४	३ ३	१ तथा४	१ पीठर४	१ चंद्रेश्वरशिवा
१ उदनशयण५	१ तथा५	१ मिश्रशर्म५	३ ३	१ तथा५	१ लज्जवर्दि५	वसव रुद्र। रामे
१ पाटरीया६	१ तथा६	१ मिश्रशर्म६	३ ३	१ तथा६	१ शाखि६	चर। सूर्य जांगे
१ ताडियाणा७	१ तथा७	१ मिश्रशर्म७	३ ३	१ तथा७	१ पीठउद७	यादित्य। तत्रय
१ अंबावा८	१ वसुपाल८	१ मिश्रशर्म८	३ ३	१ तथा८	१ अंबाधरी८	दा। विनायक
१ धंधुयलि९	१ दम९०	१ सप्तशर्म९	३ ३	१ तथा९	१ अंबाधरी९	त्रिभुजिपो।
१ भण्डुलोच१०	१ तथा११	१ घोष १०	३ ३	१ तथा१०	१ तथा१०	गोरोउमावि।
१ पंजाला११	१ कात्यायन१२	१ घोषशर्म११	३ ३	१ तथा११	१ माही११	गोरोउमावि।
१ महीयाना१२		१ दत्ताशर्म१२	३ ३	१ तथा१२	१ माही१२	गोरोउमावि।

सर्व मंगला मध्ये पूर्णजि रिपां एवदादशाना गोत्रे कथा लुवरै कथा दीव विवाहः॥ गोत्रम्॥
 अथ पूर्व

अवटंक ॥ गोत्र गार्ग्य नाम			कवली	वेद पुरुः	भद्रिका एवं गोत्र प्रवर प वार्हि
१ काव्या १	१ तथा १	१ दत्ता १	२	१ यजुः १	१ समं करी १ स्यात् ॥ आंगिरस ॥ भारद्वाज ॥
१ दुलाणे चार १	१ तथा १	१ दत्ता २	१	१ अधवण १	१ जारिव २ थव वन ॥ गार्ग्य ॥ कामदि १२
१ ई स रा ३	१ तथा ३	१ दत्ता ३	२	१ तथा ३	१ तथा ३ व ॥ रुद्र ॥ अच जे श्वर ॥ वसव
१ उड का २	१ तथा २	१ दत्ता २	३	१ यजुः २	१ अजावि च सर मे श्वर ॥ नाग ॥ अनंत ॥
<hr/>			<hr/>	<hr/>	<hr/>

12

अवटंक गोत्र नाम			कवली	वेद भद्रिका
१ यं जे चा १	१ भाद्रका यन १	१ दत्ता १	३	१ यजुः १ शिखि देवेति १
१ पसाड ला १	१ तथा १	१ दत्ता २	३	१ तथा १ म हा रुं जा वि २
१ मुं डी या ३	१ तथा ३	१ दत्ता ३	३	१ तथा १ शिखि देवेति ३
१ कुं ज रा २	१ नारायण २	१ दत्ता २	२	१ तथा १ तथा
<hr/>			<hr/>	<hr/>

कामुका ॥ सूर्य पुष्यादित्य ॥
 कामा सा पीठ ॥ गोत्रे कया प्रव
 रे कया द विवाह ॥ गोत्र १ ॥
 एवं गोत्र प्रवर ३ आंगिरस ॥
 पौर कुसः ॥ असदस्युः ॥ ठेठ श
 व ॥ यक्ष वसव ॥ गय कूपीयां ॥
 गोत्र १ ॥

सर्व भयता सूर्य ॥ तत्र य ॥ रुद्र ॥ अजा वि ॥ यदा नाग स्तन ॥ विनायक
 च उ ह रो ॥ गोरी उ मा वि ॥ जाल धर पीठ ॥ गोत्रे यदा प्रवर ॥ जा द वि वा ह ॥ गोत्र १ ॥

समस्त अष्टवटंकनां स्वातकं॥

जो त्राणां स्वातकं॥

लक्ष्मि संज्ञात्र ३

१० कर्कशराणादि १

२ वडहजेचादि १२

११ कौशिकदेवशर्म

सांघादनां मध्ये॥

१२ सांघादि २

११ चट्टेचादि १३

१० कर्कशराणादि

१ कडुतरा १

११ टारादि ३

१२ मसवाणादि १४

१५ टिंवा

१ धटेचा १

१६ अहिहारादि ४

१७ काळादि १५

काश्यपसंज्ञात्र ४

१ दहोला १

१७ अग्निगुंथादि ५

१८ वज्रौलादि १६

६ तशर्मसाधादि

१ सांघा

११ धारि यादि ६

१९ गरिमादि १७

१ कफौडा

१८ रवारउडादि ७

१२ मंडुलादि १८

१ रुखिया

१९ दहोलादि ८

१३ पिशाचभूति २०

१ लांगलादिवा

१० घोडियालादि ९

१४ कोयनारादि २१

११
११
११
११
१० १८८ वं १८

११ अग्निगुंथादि १०

१५ खजयथादि २२

अष्टवटंकनां
गताणां दि
पंचाशच्छ
तं मतं॥

३ देवशर्माणि गोत्राणि ॥ रामशर्म
कौशिक १ वज्रात्रेय १ १ लक्ष्मण १
मैत्रेय १ ३ गुप्तशर्म १
वैदिक १

२० दशशर्मातिगोत्राणि। काङ्गुय
करपप-पाग्निवेश्य। छादोग्य
गौरीश्रवा।

हरिकर का त्याग न भौनेय ३ दास्य श
गार्ग्य पार शर १ व न न पा

मातृका यनः १-आनोभा यनः १ वा पां यनः १
नात यनः १ रां डि-यः १ नौ काश्यः १ त्रान

धौ रंगवगाज वशात्कल्पेन नभस
सा कल्प १९८ बंविंशतिः

© Dhan

१ भूतनाम
२ वासुदेव
३ नंदनामालो
४ गौतमगोपाल
५ शम्भुनामालो
६ औदालस
७ पाणिनीय।

॥ लि । १ द्यो ष श र्मः ।
॥ बै ज १ ५ मी सः ।

पिष्ठात्नाद् नागद
मा।ता कापि

जात्रेय ॥

thra Trust J&K. Digitized by eGa

२ मित्रशर्म। प्रतिगोत्र-पद
मांग्यायन। कानिरयात
शार्कदाक्षस। ४ काश्यपसगोत्र १४
६ तशर्म २३
सांध्या। कर्कोटा। तंघिया। जना
गणदिवा। सांधादि।
लक्ष्मणगोत्रदांमदास २४

कूकजकरि॥ वृंटेया। सांधादि॥
८६३५

कूकग। सांधादिमध्ये।

रास विरल गालादि। मउउउ॥ हजनादस

ngotri

१५ विनेचासादिमध्योर्ध्वधुर्मसवालादिमध्ये १५ वैजवापदास गोत्र शर्म॥
 १६ स्वमाज। गोत्र। दास्यशर्म॥ १७ जातकर्मगोत्र। दत्तशर्म ४ दि। १८ मातकायन दत्तशर्म ११
 १९ वारउडा। वादण। दिवाकरदाणि। भद्रदाणा। १० कवेलादिमध्ये ६ चंगेचापसाउला। मुंडिया।
 ११ माणिका। दमनिका। मंडउयला।
 १२ वारजादि।
 गोत्रप्रतिप्रवटं कानि।
 १ कौशिकगोत्रगुप्तशर्म॥
 २ मंकेला। जयचण। ३ छंदोग्या।
 गोत्रगुप्त। ४ धोडियाला। कोद्रा
 उला। छालेया। ५ धौकडिन्यगोत्र
 गुप्तशर्म ३४। ६ लाड। शिव। मद्रुष
 ला। भद्रेताणा। धरोकज। ५ दास
 दिमध्ये॥
 १० कृत्यगोत्र दत्तशर्म ५ कतर। चंगेचादिमध्ये ११ नारायण
 महासरा। बहिरुआ। सोरठा। म गोत्र दत्तशर्म १२ कुंजरुडा
 लाणेया। स्वयं वज्रा। वंदेचादिमु। १३ लोकाश्वगोत्र दत्तशर्म १३
 ध्ये। १४ कात्यायनगोत्र दत्तशर्म
 महायाचा। मसवालादिमध्ये
 १५ आग्निवेशगोत्र दत्तशर्म १६
 जयधा। १७ कौशालगोत्र दत्तशर्म १८
 वज्रआणा। पिशाभ्रतिया। १९ शांका
 यनगोत्र दत्तशर्म २० वसाउला। २१
 गार्गसगोत्र दत्तशर्म २२ काजाद
 लांमोचा। दत्तशर्म २३ काया
 कांचनारा। ११ हदिकरगो
 त्र दत्तशर्म १२ हदिसरा। सां
 धादिमध्ये १३ ऐतिकायनगो।
 त्र। दत्तशर्म १४ मंगशराणा
 सांधादि। १५ उडूलागोत्र दत्तशर्म
 १६ छालासांधादिमध्ये १७
 देउलागा। भ्रतिया। दक्षिणा

णा। अदिह रादि। ए पशुशर गोत्र दत्तशर्म १८ निर्गुण। मंडाणा। पानशरा। वसुधाणा। हीगशिवा। व
रुआ। गरुआ। स्तनहारा। सुनेताणा। निर्गुणादिमध्ये। ई गोत्र-पालोभायना। दत्तशर्म १९ कमालोवा।
कलालोवा। दूगरेवा। वसईजापं वउठा। मित्राउला। पारादिमध्ये। ६ शांतिव्यजोत्र। दत्तशर्म २० वहोला।
निपांतिवा। वस्त्रउला। कोरावबला। रघुवरवडा। उबरवसा। १ कौरगवगोत्र दत्तशर्म २१ कवधोडिया
दि। गालगोत्र दत्तशर्म २२ उभाणा। धोडियादि। पिप्यलादगोत्र। दास्यशर्म-२३ २८ वउला। जू
अणादि। ११ भारहाजगोत्र। श्रातशर्म २८। अदिहारा। शररसा। मरुपाडी। मनाश। बजहारा। दूजिणा। पुर
वाला। जवाला। शीकरीया। गडूआणा। अरउधा। पोहरा। अदिहारादिमध्ये। ३ अत्रेयगोत्र-श्रातशर्म ३० उदे
हा। नंदेशरा। बारडूला। १ वाराहगोत्र। भूतशर्म ३१ स्तनरवा। अदिहारादिमध्ये। ११ गोतमसगोत्र-नंदशर्म ३२
अदिथापा। जूलाणा। वोकडा। जुलोडेवा। रुडिया। नादि। विजोडेवा। उधाडा। रोजा। कविजाणा। मूंदेवा
जेवा। ७ ओहणसगोत्र-शर्म ३३ का। लियाणा। सविजाणा। कूकडेवा। गुलनेवा। मंडालोवा। हलवाडेवा।
पेस्वीया। निर्गुणादिमध्ये। पालिनीयगोत्र-शर्म ३४ वडहडेवा। १५ गोपालगोत्र-नंदशर्म ३५ कांध्या।
अहलोला। प्रश्नियाणा। निर्गुणादिमध्ये। ६ कापिषुलागोत्र-नागदत्तशर्म ३६। कचइला। कापिषुल

16

कुंभारी कलोढी। वोसटा पंचगुलैचा। २२ शार्क वस गोत्र भव शर्मा। ३१ गेरिमा। पलासलो
 चा। ५ गांग्यादन गोत्र। मित्र शर्मा ३८ वंद्रेचा। भगउरा। मित्राउला। वारिका ला। पित्रुणा। ८८ श
 क रक्षस गोत्र। मित्र शर्मा। ३९ मसवाला। कासरा। भय भलासा। महिसिया। पुदनरायणा। पाटरी
 चा। तडीयाणा। प्रवाचा। मसवालादि॥१॥ ~~कोटिक गोत्र देव शर्मा~~ ४० कर्कशाणा। गरुडा। चोटिया
 ला। लुलोचा। स्तनगन। पीपला। आववध्रा। षोडियाला। माउताणा। प्रजीयाणा। कर्कशाणादि मध्ये।
 २६ कुत्रेय गोत्र। देव शर्मा ४१ पूरिया। दलांलोचा। धोडिया लादि। गोत्रे कोविवाहः॥ गोत्र भेदे
 प्रिवरैको = प्रविवाहः॥ गोत्र भेदे पिप्रवरैको = प्रविवाहः॥ ~~समान प्रवर ग्रंथ समाप्तः॥~~ खंवत १७८५
 राके ५५१ प्रवर्तमाने वैशाख शुक्ल १ प्रतिपत्तियौ चतुर्वासरे॥ १५२। जि। का. न्या. मध्ये शैव स्तुष
 देव शंकर ॥ शुभं भवतु॥ स्वस्ति या विनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धा। विनायक प्रिया। नित्यं
 तां स्वस्तिं ब्रुवंतु न॥ १ पुण्येन ह तेन व्याधि पुण्येन ग्रह मुच्यते। पुण्येन प्राप्ते लक्ष्मी यतो धर्मस्ततो जयः
 आदित्याद्याः स विगणा ये चान्ये तपोधनाः॥ भवतु यत्तमानस्य आपात्रिर्वदपरायणा॥ ३५ स्वस्ति।

खंडो

१६

५७९